सदानीरा

विश्व कविता और अन्य कलाओं की पत्रिका

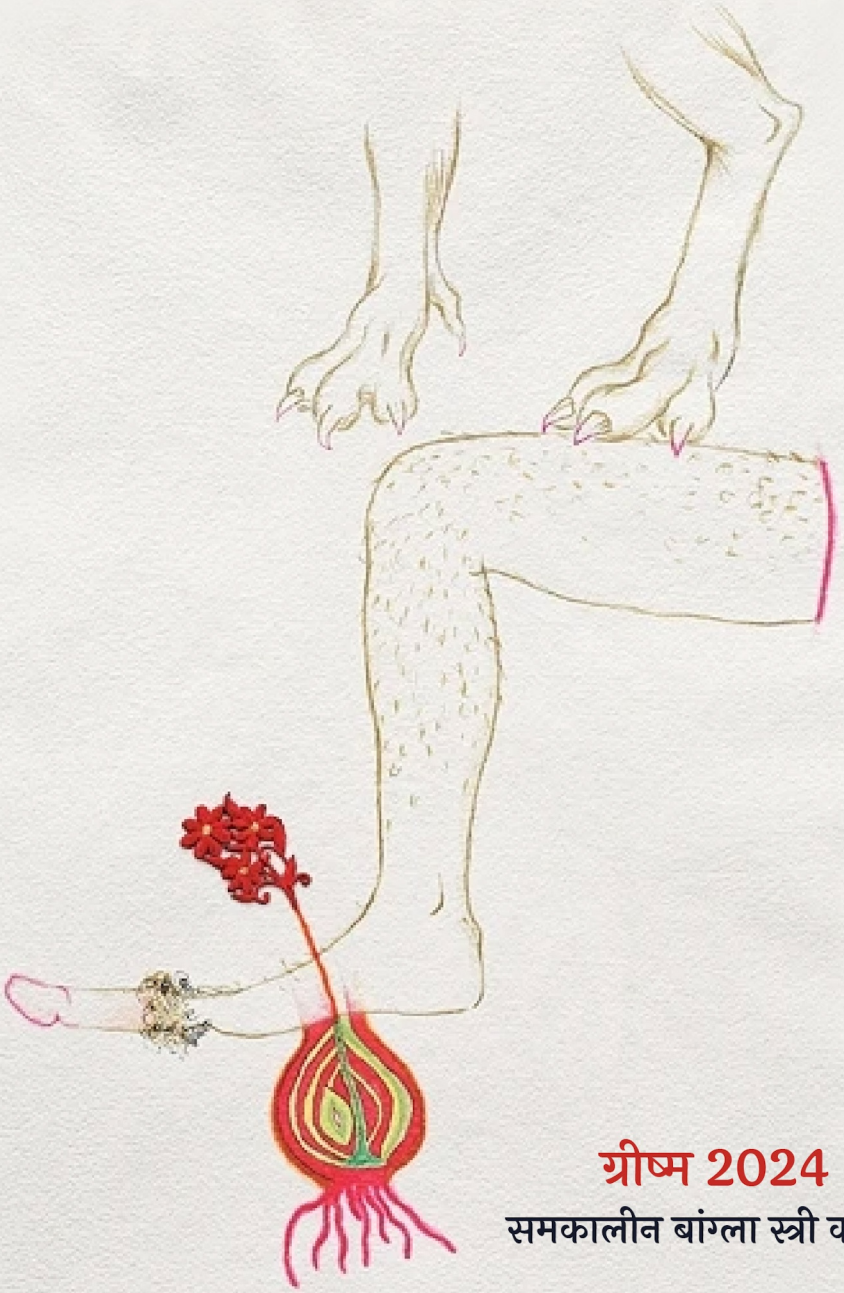

ग्रीष्म 2024

समकालीन बांग्ला स्त्री कविता

सदानीरा

विश्व कविता और अन्य कलाओं की पत्रिका

ग्रीष्म 2024

समकालीन बांग्ला स्त्री कविता

अंक-30 । वर्ष-9
अक्टूबर 2023–जून 2024
ISBN 978-81-19555-82-6

संस्थापक

आग्नेय

संपादक

अविनाश मिश्र

इस अंक का संपादन

बेबी शॉ

आवरण : मिथु सेन

संपादकीय संपर्क

बी-27, 304

शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II

ग़ाज़ियाबाद-201005

उत्तर प्रदेश

मोबाइल : 9818791434

editor@sadaneera.com

प्रकाशक

हिंद युग्म

सी-31, सेक्टर-20, नोएडा-201301

उत्तर प्रदेश

रचनाएँ भेजने के लिए :

submit@sadaneera.com

इस अंक का मूल्य : 249 रुपए

@ सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पत्रिका का कोई भी हिस्सा किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम, जिसमें सूचना संग्रहण और सूचना संसाधन की विधियाँ सम्मिलित हैं, द्वारा प्रकाशक अथवा संपादकों की पूर्वानुमति के बिना पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता सिवाय एक समीक्षक के जो समीक्षा में संक्षिप्त अंशों को उद्धृत कर सकता है। प्रकाशित कृतियों का कॉपीराइट लेखकों / अनुवादकों / कलाकारों का है। भेजी गई रचनाओं पर अगर सात दिन के भीतर कोई उत्तर नहीं मिलता, तब रचनाकार उन्हें अन्यत्र भेजने के लिए स्वतंत्र हैं। मुफ़्त अंक और नमूना प्रति भेजने की सुविधा नहीं है, कृपया इस संदर्भ में कोई फ़ोन, ई-मेल या पत्र-व्यवहार न करें।

क्रम

ग्रीष्म 2024

समकालीन बांग्ला स्त्री कविता

प्रवेश

बेबी शॉ 07

समकालीन बांग्ला स्त्री कविता

राजलक्ष्मी देवी 21
अनुवाद : मीता दास

कविता सिंह 25
अनुवाद : चंद्राली मुखर्जी

विजया मुखोपाध्याय 28
अनुवाद : मीता दास

नवनीता देवसेन 32
अनुवाद : मीता दास

केतकी कुशारी डायसन 36
अनुवाद : चित्रप्रिया गांगुली

गीता चट्टोपाध्याय 38
अनुवाद : अजंता देव

रमा घोष 41
अनुवाद : चित्रप्रिया गांगुली

देवारति मित्र 43
अनुवाद : बेबी शॉ

कृष्णा बसु 47
अनुवाद : जोशना बैनर्जी

शमीम आज़ाद 51
अनुवाद : चित्रप्रिया गांगुली

अनीता अग्निहोत्री 52
अनुवाद : लिपिका साहा

अंजलि दाश 55
अनुवाद : चंद्राली मुखर्जी

अरुंधति घोष 59
अनुवाद : अजंता देव

झरना रहमान 63
अनुवाद : मीता दास

वीथि चट्टोपाध्याय 68
अनुवाद : मीता दास

अनुराधा महापात्र 75
अनुवाद : अमृता बेरा

संयुक्ता वंद्योपाध्याय 79
अनुवाद : बेबी शॉ

मल्लिका सेनगुप्त 81
अनुवाद : बेबी शॉ

नाज़नीन ख़लील 87
अनुवाद : मीता दास

चैताली चट्टोपाध्याय 91
अनुवाद : जोशना बैनर्जी

सुतपा सेनगुप्त 94
अनुवाद : मीता दास

ईशिता भादुड़ी 98
अनुवाद : लिपिका साहा

तसलीमा नसरीन 101
अनुवाद : अमृता बेरा

यशोधरा रायचौधरी 107
अनुवाद : अमृता बेरा

शहनाज़ मुन्नी 111
अनुवाद : चित्रप्रिया गांगुली

सेवंती घोष 114
अनुवाद : चित्रप्रिया गांगुली

तृष्णा बसाक 119
अनुवाद : मीता दास

रोशनारा मिश्र 122
अनुवाद : बेबी शॉ

पॉलमी सेनगुप्त 126
अनुवाद : बेबी शॉ

चंद्राणी वंद्योपाध्याय 129
अनुवाद : बेबी शॉ

मंदाक्रांता सेन 131
अनुवाद : चित्रप्रिया गांगुली

मितुल दत्त 135
अनुवाद : संध्या सिंह वर्मा

तिलोत्तमा बसु 139
अनुवाद : तृषान्विता

श्वेता चक्रवर्ती 141
अनुवाद : बेबी शॉ

अनिंदिता गुप्त रॉय 143
अनुवाद : चित्रप्रिया गांगुली

अदिति बसु रॉय 147
अनुवाद : चित्रप्रिया गांगुली

वितस्ता घोषाल 152
अनुवाद : मीता दास

श्रीदर्शिनी चक्रवर्ती 156
अनुवाद : संध्या चौरसिया

सीमिता मुखोपाध्याय 159
अनुवाद : अंकिता शाम्भवी

मेघ अदिति 166
अनुवाद : चंद्राली मुखर्जी

राका दाशगुप्त 169
अनुवाद : संध्या चौरसिया

स्वागता दाशगुप्त 171
अनुवाद : तृषान्विता

अर्पिता कुंडू 173
अनुवाद : जोशना बैनर्जी

सम्राज्ञी वंद्योपाध्याय 177
अनुवाद : बेबी शॉ

शबरी शर्मा रॉय 179
अनुवाद : चंद्राली मुखर्जी

तानिया चक्रवर्ती 182
अनुवाद : कुसुम जैन

रिमझिम अहमद 184
अनुवाद : मीता दास

कस्तूरी सेन 188
अनुवाद : बेबी शॉ

राजेश्वरी षडंगी 190
अनुवाद : बेबी शॉ

अमृता भट्टाचार्य 192
अनुवाद : अजंता देव

बेबी शॉ 195
अनुवाद : अमृता बेरा

आभार

प्रवेश

समकालीन बांग्ला स्त्री कविता— एक सविनय निवेदन

बेबी शॉ

भारत की स्वतंत्रता के बाद के काल में बांग्ला कविता में एक महत्त्वपूर्ण योगदान स्त्री कवियों का है। यों ऐसा नहीं है कि इस समय से पहले स्त्री कवियों की क़लम से कविता का भीतरी संसार उजागर नहीं हुआ, लेकिन आज़ादी के बाद का कालखंड जिसे बांग्ला-कविता-परिसर में 'उत्तर जीवनानंद काल' कहते हैं; उसमें उस समय का बंगाल है जिसमें कविता आधुनिकता की प्राथमिक राह को पार कर एक उत्तर आधुनिक काल में चली गई। यहाँ परंपरावाद धीरे-धीरे अस्तित्ववाद के साथ घुल-मिल रहा है और इस क्रम में बंगाल का काव्यात्मक चिंतन भी। इस स्थिति में बांग्ला कविता में एक अलग स्वर निर्मित हुआ। उस समय की स्त्री कवियों ने सामाजिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक विचारों, कामुकता, उत्पीड़न और वर्गविषयक चेतना को अपनी कविताओं में दर्ज किया। इस प्रकार इस रचनाशीलता में स्त्रीवादी और लैंगिकता-संबंधी विचार प्रमुखता से आने प्रारंभ हुए। बांग्ला कविता ने तब देखा कि कैसे स्त्रियों की आवाज़ बांग्ला साहित्य का नक़्शा बदल सकती है। राजलक्ष्मी देवी (जन्म : 1927) ने इसमें प्रधान भूमिका निभाई।

राजलक्ष्मी देवी पचास के दशक की उन स्त्री कवियों में से एक हैं जिनका व्यक्तित्व अत्यंत चमकदार है। अगर हम बांग्ला कविता के इतिहास की समीक्षा करें तो पाएँगे कि उन्नीसवीं सदी और रवींद्रनाथ के समय में कुछ ऐसी स्त्री-कवि उदित हुईं जिनके लेखन का मुख्य विषय दाम्पत्य-प्रेम था। वह भी पति